भाग-IV : समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन

अध्याय 6 : समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन

हालांकि समुदाय सजातीय इकाइयां नहीं होतीं फिर भी उनके बीच कई बातें साझा होती हैं। एक ही वातावरण अथवा भौगोलिक क्षेत्र में रहते हुए समुदाय संकटों से घिरे होते हैं और आपदा झेले होते हैं। सामुदायिक योजना बनाने का प्रयोजन यह होता है कि व्यक्तियों और समुदाय की असुरक्षा कम की जाए और आपदाओं के विनाशकारी प्रभावों को सहन करने की उनकी क्षमता बढ़ाई जाए। इस प्रकार सामुदायिक योजना बनाने में लोगों की सहभागिता जरूरी होती है क्योंकि 'जवाबी कार्रवाई करने में वे सबसे पहले आगे आते हैं।

जवाबी कार्रवाई करने वालों में सबये पहले आने वाले लोगों के रूप में समुदाय

आपदा के दौरान और उसके तत्काल बाद जवाबी कार्रवाई करने के लिए अमूमन पड़ोसी अथवा समुदाय के लोग सबसे पहले आते है। जवाबी कार्रवाई करने वालों में आगे आने वाले वे व्यक्ति होते हैं जोकि आपदा की स्थिति में सबसे पहले कार्रवाई करते हैं, जिनके पास चिकित्सीय अथवा अन्य आपात्कालीन स्थितियों से निपटने का कौशल होता है और वे समुदाय के अंग होते हैं अथवा उसके सहयोग से काम करते हैं। आपदा से पूर्व तथा उसके बाद शुरू के कुछ घण्टे लोगों के प्राण बचाने तथा और क्षति को रोकने की दृष्टि से महत्वपूर्ण और बहुमूल्य होते हैं। अक्सर ऐसा होता है कि आपदा स्थल तक पहुँचने में बाहरी मदद आने में समय लग जाता है। ऐसी स्थिति में समुदाय के प्रशिक्षित सदस्य जीवनरक्षक सम्पदा के रूप में कार्य करते हैं। इसके अलावा खतरे को कम करने की दिशा में समुदाय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समुदाय की शिक्षा और सहयोग के बिना आपदा प्रबंध की कोई भी योजना पूरी नहीं हो सकेगी। योजना समुदाय के लिए होती है।

भारत सरकार आपदा प्रबंध के विभिन्न क्षेत्रों में सामुदायिक क्षमताएं निर्मित करने की पुरजोर हिमायत करती है और समुदायों से आपदा प्रबंध योजनाएं तैयार करने का आग्रह करती है जिससे कि आपदा को रोका जा सके, उसके दुष्प्रभावों को कम किया जा सके और आपदा से निपटने के लिए बेहतर तैयारी की जा सके। सरकार का मानना है कि आपदा के खतरों को कम करने के लिए समुदाय की योजनाएं तैयार करने में अध्यापकों और विद्यार्थियों द्वारा अहम भूमिका निभाई जा सकती हैं क्योंकि वे समुदाय के शिक्षित सदस्य हैं।

भारत : परम्परागत रूप से एक समुदाय-आधारित समाज

परिवार में शिशु का जन्म, नए घर में प्रवेश, फसल, विवाह, पर्व , मृत्यु- भारत में हमारे जीवन की प्रत्येक घटना में समुदाय शामिल है। सिंधु घाटी की सभ्यता, महाभारत के समय से लेकर वर्तमान संयुक्त परिवार अथवा ग्रामीण गांवों तक समुदाय के स्तर पर निर्णय लेने की प्रकिया और परस्पर जुड़े रहना हमारी ताकत रही है। तथापि, शहरी क्षेत्रों में एकल परिवारों की बढती हुई संख्या और इस तथ्य के चलते कि शहरी क्षेत्रों में जीवन की दिनचर्या अवैयक्तिक होती जा रही है, आपदा के समक्ष हम अक्सर अकेले और बेसहारा महसूस करते हैं। आइए समुदाय के साथ अपने सम्बन्धों को फिर से बनाएं और अपनी असुरक्षाओं को कम करने के लिए योजना बनाना और एक दल के रूप में मिलकर कार्रवाई करना सीखें।

- आपदाओं के सम्बन्ध में एक बुरी बात यह है कि **कभी-कभी वे आने से पहले दस्तक देती हैं, कभी नहीं भी देतीं ।**
- आपदाओं के सम्बन्ध में एक और बुरी बात यह है कि वे **असमानों में कोई भेदभाव नहीं करतीं ।**
- आपदाओं के सम्बन्ध में एक अच्छी बात यह है कि **यदि हमने समुचित रूप से पहले से तैयारी कर रखी है तो संकट, आपदाओं का रूप नहीं ले सकते ।**

पिछले अध्याय में आपने इस बारे में पढ़ा होगा कि आपदाओं के दुष्प्रभावों को कम करने के लिए मनुष्य किस प्रकार प्रयास कर सकता है। संभवतः यह कहना भ्रामक है कि 'मनुष्य आपदाओं के दुष्प्रभावों को कम कर सकता है। जब तक हम सब मिलकर संकट का सामना नहीं करते तब तक हम अपनी मर्जी से उसे आपदा का रूप लेने से नहीं रोक सकते। व्यक्तिगत स्तर पर हम अधिक से अधिक वैयक्तिक संकटों से अपना बचाव कर सकते हैं। क्या आप ऐसी किसी स्थिति का उल्लेख कर सकते हैं ? हाँ, एक ऐसी स्थिति है- दुपहिया पर बैठे हुए हेल्मे' पहनकर हम अपना बचाव कर सकते हैं। क्या आप परिवार के किसी भी सदस्य अथवा मित्र को (जो आयु में आपसे बड़े हैं और जिनकी आयु वाहन चलाने की है) दुपहिया चलाते समय हेल्मे' पहनने की याद दिलाते हैं ?

यदि हम वैयक्तिक सावधानियां बरतें भी, तो भी किसी भीषण चक्रवात अथवा विनाशकारी भूकम्प के सामने कोई अकेला व्यक्ति अथवा उसका परिवार क्या कर सकता है। समुदाय की भूमिका यहीं से शुरू होती है केवल समुदाय ही यह सुनिश्चित कर सकता है कि पहले से तैयारी के समुचित उपाय किए जाएं और आपदा आने पर तेजी से जवाबी कार्रवाई की जाए।

किसी भी आपदा प्रबंध पहल के केन्द्र बिन्दु में समुदाय क्यों होना चाहिए ?

(1) **सबसे पहले जवाबी कार्रवाई करने वाले लोग :** क्योंकि समुदाय आपदा स्थल पर मौजूद होता है, इसलिए जवाबी कार्रवाई करने के लिए वह सबसे पहले आता है।

(2) **अधिकतम जानकारी का स्रोत :** जब किसी क्षेत्र में कोई आपदा आ जाती है तो वहां रहने वाले लोगों और उनके संसाधनों की बाबत, उस क्षेत्र के निवासियों को छोड़कर किसी भी अन्य के पास बेहतर अथवा विस्तृत और ताजा जानकारी नहीं हो सकती।

(3) आपदा का मुकाबला करने के लिए स्थानीय तंत्र : अधिकांश आपदाएं बार-बार आती हैं और इसलिए उनसे निबटने के लिए सदैव परम्परागत रूप से स्थापित होता हे जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता रहता है। स्थानीय माहौल में यह तंत्र तुरन्त जवाबी कार्रवाई करने में सक्षम होगा।

(4) स्वयंसेवा मनुष्य के अपने हित में है : इस प्रकार की घटना होने पर तत्काल जवाबी कार्रवाई करना समुदाय की सहज प्रवृत्ति होती है क्योंकि बाह्य संसाधनों पर आवश्यकता से अधिक निर्भर रहने से अनावश्यक विलम्ब हो सकता है और यहां तक कि निरर्थक हो सकता है।

समुदाय के सहयोग से ही समुदाय की असुरक्षा कम हो सकती है

आइए सीखने वाले समुदाय की एक कहानी पढ़ें

सुखपार गांव की एक कहानी नीचे प्रस्तुत है

रामजी सुखपार और निकटवर्ती गांवों में एक बहुत सम्मानित व्यक्ति था। एक दिन उसने अपने 15 वर्षीय पोते भरत से कहा कि खण्ड (जिले की एक विकास इकाई) विकास अधिकारी (बीडीओ) ने आपदा प्रबंधन के एक समारोह में उसे बुलाया है। उत्सुकतावश भरत ने अपने दादा, सरपंच और तलाथी (ग्राम पंचायत का सचिव) के साथ समारोह में जाने का निश्चय किया। सरपंच की बेटी गौरी भी, जो भरत की सहपाठिनी थी, समारोह में गई ।

समारोह में पहुँचकर भरत ने देखा कि सरकारी कार्यकर्ताओं के अलावा उसके और गौरी जैसे स्वयंसेवक भी समारोह में उपस्थित थे जो यह समझा रहे थे कि उनका क्षेत्र किस तरह भूकम्प और चक्रवात-दोनों से भारत का सर्वाधिक असुरक्षित क्षेत्र है। उनके पास ऐसे मानचित्र थे जिनसे यह पता चल रहा था कि उनका ब्लाक किस प्रकार पिछले चक्रवातों से मात्र कुछ सौ किलोमीटर से बचा था ।

इस बैठक में 8-10 निकटवर्ती गांवों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सुखपार गांव के सभी वासियों की एक विस्तृत गांव-वार बैठक और उसके बाद निकटवर्ती गांवों की बैठक तय की गई। आपदा संबंधी पूर्व तैयारी, जवाबी कार्रवाई और रोकथाम के उपायों से जुड़े सवालों के बारे में चर्चा करने के लिए सुखपार में एक कार्यक्रम आयोजित करने की जिम्मेदारी रामजी और सरपंच ने अपने ऊपर ले ली। सुखपार में यह बैठक आने वाली पूर्णिमा के दिन पंचायत घर में आयोजित की जानी थी।

भरत ने अपने दादा से कहा कि वह बैठक में भाग लेने के लिए बड़ी संख्या में लोगों को प्रेरित करने की दिशा में पूरा प्रयास करेगा।

संगठन में सहायता करने के उद्देश्य से भरत ने सबसे पहले अपने सभी मित्रों से मुलाकात की और उनसे कहा कि वे बैठक में भाग लेने के लिए अपने माता-पिता को याद दिलाएं। गौरी अपने स्कूल के प्रिंसीपल के यहां गई और उनसे अनुरोध किया कि सभी अध्यापकों को कक्षा में इस आशय की घोषणा करने के लिए कह दिया जाए। तदनुसार सभी बच्चों को कहा गया कि वे अपने माता-पिता से बैठक में भाग लेने का आग्रह करें। इसके बाद भरत ने मंदिर के पुजारी पंडित रामदास के साथ सम्पर्क किया और उनसे अनुरोध किया कि वे इस बैठक का महत्व बताने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लें क्योंकि बैठक में उनके गांव की सुरक्षा पर चर्चा की जाएगी। उसके दोस्त अहमद ने पहाड़ की चाटी पर बनी मस्जिद में जाकर इसी तरह की कार्रवाई की। गौरी ने गांव के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (पीएचसी) में तैनात डाक्टर और एएनएम (नर्स) को सूचित किया। डाकिए और महिलाओं के स्वयंसेवी समूह (एस एच जी) से भी बैठक संबंधी समाचार का प्रसार करने का अनुरोध किया गया।

ग्राम सभा में तलाथी ने बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों को बताया कि पिछली बैठक में उसने क्या कुछ सीखा था। सुखपार की भौगोलिक स्थिति के लिए जो बड़ा खतरा बना था, वह सभी के लिए चिन्ता का कारण बन गया।

तदनन्तर रामजी बोलने को खड़ा हुआ और सभी तसल्ली से उसकी तरफ देखने लगे। रामजी ने एक दिलासा देने वाली मुस्कान बिखेरी और कहा, "हम लोग ऐसा मानते हैं कि चक्रवात हमारे ऊपर मां प्रकृति का प्रकोप है। इसलिए यदि हमें मरना है तो हम मरेंगे। यदि हम यह मानलें कि बुखार भी ईश्वर की देन है तो हमें प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के डाक'र के पास जाने की कोई जरूरत नहीं होगी। लेकिन ईश्वर तो रक्षक भी है और वह केवल उनकी रक्षा करता है जो स्वयं अपनी रक्षा करने का प्रयास करते हैं। इसलिए हमें सदैव किसी भी स्थिति के लिए पूर्व तैयारी करनी चाहिए और जवाबी कार्रवाई करने के लिए तैयार रहना चाहिए।" तदनन्तर उन्होंने समुदाय- आधारित आपदा प्रबंध की पूरी प्रक्रिया के बारे में समझाया।

पहला काम ग्राम आपदा प्रबंध समिति (वीडीएमसी) का गठन करना था। सरपंच के अलावा तलाथी, स्कूल प्रिंसीपल, पीएचसी डाक्टर, ग्राम सेवक, एसएचजी की दो महिलाएं और एक एनएसएस स्वयंसेवक इस समिति में शामिल किए गए।

रामजी को सर्वसम्मति से इस समिति का अध्यक्ष चुना गया। रामजी ने कहा कि, "समिति का काम यह है कि आपदा स्थिति उत्पन्न होने पर मार्गदर्शन करे तथा की जाने वाली कार्रवाई के बारे में निर्णय ले। लेकिन आपात्काल में जवाबी कार्रवाई करने के लिए समिति को कतिपय विशेषज्ञों की जरूरत होगी। इस प्रयोजन के लिए हमें सुखपार के लिए एक आपदा प्रबंध दल (डीएमटी) की जरूरत है। इस दल में ऐसे स्वयंसेवक शामिल होने चाहिए जिन्हें ऐसे बुनियादी कार्यक्षेत्रों में प्रशिक्षित किया जा सकेगा जो प्रभावी जवाबी कार्रवाई के लिए महत्वपूर्ण हैं।"

चाय की दुकान चलाने वाले रोशन लाल ने कहा कि, "काका हममें से अधिकांश अर्द्धसाक्षर हैं, हमसे कौनसे महत्वपूर्ण कौशल सीखने की अपेक्षा की जा सकती है ?"

हवलदार छगन सिंह बोला, "हां यह ठीक है कि आप अर्द्ध साक्षर हैं लेकिन चक्रवात तो सर्वथा निरक्षर है। काश ! कि मैं 'प्रवेश वर्जित' का सूचना प'' लगाकर उसका रास्ता मोड़ सकता।"

रामजी ने कहा कि, "मैं ऐसे लोग चाहता हूँ जो कि अच्छी तरह तैर सकते हैं और जिनकी काया इतनी बलिष्ठ हो कि वे अपने साथी ग्रामवासियों को उठाकर ले जा सकें। डा0 पटेल को पीएचसी में मदद की जरूरत होगी ताकि वे गंभीर मामलों की तरफ ध्यान केन्द्रित कर सकें जबकि प्राथमिक चिकित्सा अन्य कार्मिक उपलब्ध करा सकते हैं इसके अलावा यदि टेलीफोन और बिजली ठप्प हो जाती है तो जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें बादल के रेडियो का सहारा लेना होगा। बेचारे बादल को रेडियो के प्रति उसके आकर्षण के लिए सदैव डांट खानी पड़ती है।"

इसके बाद इस समूह ने निम्न क्रियाकलाप/ जिम्मेदारियां संभालने के निमित्त प्रत्येक क्रियाकलाप/ जिम्मेदारी के लिए नामों का एक सेट तय करने के लिए बातचीत की, चर्चा की, संपर्क किया, विचार किया, झगड़ा किया तथा और ऐसा सब संभव किया जोकि एक समूह कर सकता है :

- ❖ समय रहते चेतावनी और संचार
- ❖ दुर्घटनाग्रस्त स्थान खाली करना और अस्थायी आपदा प्रबन्ध
- ❖ खोज और बचाव
- ❖ स्वास्थ्य और प्राथमिक चिकित्सा
- ❖ राहत समन्वय
- ❖ पानी और स्वच्छता

(यह सूची आपदा के प्रकट होने पर आवश्यक्तानुसार विशेषज्ञता के संभावित क्रमानुरूप है)

प्रश्न : उपर्युक्त चर्चा के आधार पर क्या आप सुखपार की ग्राम आपदा प्रबन्ध समिति का गठन बता सकते हैं ? समिति के प्रत्येक सदस्य द्वारा निभाए जाने वाले दायित्वों की सूची तैयार करें ।

उत्तर _____

_____

प्रश्न : क्या आप वीडीएमसी और आपदा प्रबन्ध समिति के बीच का अन्तर समझते हैं ?

उत्तर _____

_____

लगभग 2-3 दिनों के बाद भरत, गौरी तथा उनके मित्रों ने सहभागितापूर्ण ग्रामीण मूल्यांकन (पीआरए) करने के प्रयोजन से सुखपार में रहने वाले विभिन्न समुदायों के सभी सक्रिय प्रतिनिधियों को इकडा किया । स्वयंसेवकों की चर्चा होने पर जया नाम की एक छोटी सी लड़की ने जिसे रंगोली बनाने में महारथ हासिल थी, उपस्थित स्वयंसेवकों की सहायता से स्कूल के बरामदे में गांव का एक मानचित्र खींचने की पेशकश की। समुद्र का किनारा सुखपार की एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक विशेषता बताई गई ।इसके बाद जया ने गांव की सीमा खींची । उसने स्कूल स्थल के साथ गांव बनाना शुरू कर दिया ।

इसके बाद पीएचसी, पुलिस थाना, मन्दिर, मस्जिद तथा तट विस्तार दर्शाए गए । मालती की गांव में किराने की दुकान थी और वह चाहती थी कि गांव का बाजार स्थल ध्यानपूर्वक दर्शाया जाए । कुंए अंकित किए गए और उनके संन्दर्भ में यथासंभव सर्वोत्तम ढंग से और अधिकाधिक मकान दिखाए गए ।

भरत ने कहा "प्रारम्भिक चेतावनी के रूप में हम मस्जिद को सुखपार के सर्वोत्तम साधन का स्थान देंगे क्या हम अपने गांव की अन्य ताकतों की पहचान कर सकते हैं ?"

इस पर प्रिंसिपल शर्मा ने कहा "लोगों को संकटग्रस्त स्थान को खाली करना पड़े तो एक सुरक्षित स्थान के रूप में आप मेरे स्कूल के अहाते का प्रयोग कर सकते हैं और प्रभावित लोग एक निश्चित अवधि तक वहां रह सकते हैं।"

मालती बोली "बताइए कि क्या आपको राशन की जरूरत हो सकती है। मेरे पास जितना राशन उपलब्ध है वह हाजिर रहेगा। मेरे गांव के लिए मेरा यही योगदान है।"

चम्पा देवी बोल उठी "हम तो सोचते थे कि सिर्फ कंकड़ ही मुफ्त मिल सकते हैं ।" चम्पा देवी की बात सुन कर सभी हंस पड़े।

एक-एक कर के ऐसे परिवारों की पहचान की गई जिनके पास ट्रैक्टर, ट्रक तथा जैनरेटर सैट मौजूद थे।

अंत में लोगों का ध्यान गांव में उपलब्ध मानव संसाधनों की ओर गया। आपदा प्रबंध समितियां पहले ही बना दी गई थीं। अतः प्रत्येक समूह के सदस्यों के घरों पर समुचित संकेत चिन्ह अंकित कर दिया गया। राजू नामक डाकिए ने भी अपना दावा प्रस्तुत करते हुए कहा कि वह और उसकी बाईसिकल फिडीपीडीज की तरह दौड़ लगाएंगे मैराथन दौड़ के पीछे यूनानी दन्तकथा।

जब भरत ने भावी संदर्भ के लिए चार्ट पेपर पर रंगोली की एक नकल बनाई तो जया खुशी से मुस्करा उठी।

जया ने एक मजबूत और आत्मनिर्भर सुखपार का मानचित्र बनाने का काम पूरा कर लिया था।

प्रश्न : क्या आप ग्रामवासियों द्वारा प्रयुक्त सहभागितापूर्ण ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक / तकनीकों का नाम बता सकते हैं ? यह जानने का प्रयास करें कि आपदा जोखिम प्रबंध में इन तकनीकों ने किस प्रकार उनकी मदद की थी।

सुखपार की आपदा प्रबंध समिति की बैठक शीघ्र ही आयोजित की गई और बैठक में शीला जी अपनी शंका ले कर उपस्थित थी। उन्होंने कहा कि, "दलों को जानना तो अच्छा बात है किन्तु जब तक हमारे डीएमटी सदस्यों को प्रशिक्षित नहीं किया जाता, वे अपनी सर्वोत्तम क्षमता का परिचय नहीं दे सकते। "

प्रश्न : इसके लिए हमारी क्या योजना है ?

स्थिति संभालने के लिए राम जी पुनः सामने आए और बोले, "शीला बहन इस बारे में हम पहले ही सरकार को कह चुकेहैं और वह इस काम में हमारा सहयोग करेगी। पंचायत और डी एम सी को इसी तरह की पहल करने वाले अन्य गांवों के साथ तालमेल करना होगा तथा दलों को प्रशिक्षित करने के लिए जानकार लोगों का पता लगाना होगा।"

अगली बैठक में राम जी एक सूची लेकर हाजिर हुए हमारे क्षेत्रवार प्रशिक्षण में हमारी मदद करने के लिए हमने खण्ड प्रशासन के परामर्श से निम्न संगठनों का पता लगाया है :

प्रारंम्भिक चेतावनी और संचार : हमारे जिला मुख्यालय में सेना शिविर

- दुघटनाग्रस्त स्थान खाली कराना और अस्थायी आश्रय प्रबन्ध : जिला पुलिस विभाग
- खोज और बचाव : हमारे जिला मुख्यालय का दमकल केन्द्र

- स्वास्थ्य और प्राथमिक चिकित्सा : जिला सिविल अस्पताल और सेंट जान एम्ब्यूलेंस प्रत्येक से एक एक डाक्टर ।
- राहत समन्वय : स्थानीय एन एस एस स्कन्ध
- जल और स्वच्छता : जिला पंचायत द्वारा एक जल स्वच्छता निरीक्षक भेजा जा रहा है ।

सरपंच ने कहा कि, "इस सबके अलावा हमें अपने राजमिस्त्रियों को भूकम्प / चक्रवातरोधी मकान बनाने का प्रशिक्षण भी देना चाहिए। इस तकनीक को वे भूकम्परोधी पश्च फिटिंग (Retrofitting) भी कहते हैं, हमारे कुछ टूटे-फूटे भवन इससे किंचित लाभ उठा सकते हैं याद रखें कि बीडीओ साहब कह रहे थे कि इस प्रशिक्षण के लिए वे कुछ मास'र राजमिस्त्रियों की व्यवस्था कर सकते हैं।"

"हां और मैं जब जिला मुख्यालय में गया तो मैंने कुछ घरों में पाइप लगे हुए देखे। पूछने पर पता चला कि यह चेनलों की एक ऐसी व्यवस्था है जिसके जरिए छत पर बारिश का पानी इकडा किया जा सकता है और घरेलू प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इसे छत पर बारिश के पानी का संग्रह करते हैं मैं सोचता हूं कि क्या हम लोग भी ऐसा नहीं कर सकते, ऐसा करने से हर साल हमारे सामने पानी की कमी का जो संकट पेश आता है, उससे मुक्ति मिल सकती है। यदि हम सूखे के दिनों में अपने खेतों में परम्परागत जलाशयों में बारिश के सीमित पानी का संग्रह कर सकते हैं तो अपने घरों के लिए भी ऐसा क्यों नहीं कर सकते ?"

अगले छः महीनों में एक-एक कर के सभी क्षमताओं का निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया और सुखपार एकदम नए ढंग का गांव बन गया। सुखपार के रंग-रूप में कोई बदलाव नहीं आया था, मात्र कुछ नए निर्माण कार्य जारी थे लेकिन मनोदशा में बदलाव आया और अब यहां के समुदाय के मन में कहीं अधिक आत्मविश्वास था।

डी एम सी ने अब सुखपार के लिए एक आपदा तत्परता तथा जवाबी कार्रवाई योजना तैयार करने का निर्णय लिया। इससे आपत्कालीन स्थिति पेश होने पर वहां रहने वाले सामान्य लोगों और प्रत्येक पणधारी द्वारा की जाने वाली मानक प्रचालन क्रियाविधियों (एसओपी) के ब्यौरे प्रस्तुत किए गए। इसमें डीएमी के भीतर और बाहर (जिला और ब्लाक प्रशासन) संबंधित कार्मिकों के साथ सम्पर्क स्थापित करने का विवरण देने के साथ-साथ संकटों, असुरक्षाओं और संसाधनों के बारे में पीआरए तथा अन्य स्रोतों द्वारा इकडी की गई जानकारी भी दी गई थी।

एक दिन सवेरे भरत पहाड़ी पर स्थित मस्जिद में गया। वहां उसने मौलवी से नमस्ते करने के बाद उनसे कहा कि, "मौलाना साहब आपको याद है, आपने गांव की गलियों में तैरती अपनी आवाज की चर्चा की थी। अब समय आ गया है और सुखपार को आपकी आवाज की जरूरत है। इसके बाद उसने बाहर की तरफ समुद्र पर दृष्टि डाली।"

उस बूढ़े आदमी ने एक शब्द भी नहीं बोला; न तो उसकी पलकें झपकी न उसकी झुरियों में कोई खिंचाव आया। वह उठा और माइक पर जा कर घोषणा करने लगा, "अल्ला के नाम पर भाग कर स्कूल में चले आइए समुद्री डाकू आ रहा है। चक्रवात की चेतावनी मिली है ।" लोगों के समक्ष घोषणा करते हुए उसकी आवाज प्रतिदिन खुदा की बंदगी करने वाली आवाज की तुलना में अधिक जानदार थी ।

रामजी अचम्भित था। लेकिन हर स्त्री और पुरुष अपने अपने काम पर तैनात हो गए। बचाव दल ने सबसे पहले बूढ़ों, रोगियों, गर्भवती महिलाओं तथा दूध पिलाने वाली माताओं, शारीरिक / मानसिक रूप से विकलांग व्यक्तियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। गांव में मौजूद कुछेक टेलीफोन काम कर रहे थे। राजू नाम का डाकिया अपनी जबान पर खरा उतरा। सहायता प्राप्त करने के लिए वह अपनी

साईकिल पर खण्ड मुख्यालय के लिए रवाना हो गया। प्रिंसिपल ने अपने स्कूल में संचालन और कार्यान्वयन तंत्र की व्यवस्था की डाक्टर पटेल कुछ ऐसे वृद्ध व्यक्तियों के इलाज में जुट गए जिन्हें सांस लेने में कठिनाई हो रही थी। बंसी ने डीएमटी सदस्यों के लिए गोदाम के दरवाजे खोल दिए। जिन लोगों को भीड़ में मामूली चाटें आई थी उन्होंने प्राथमिक चिकित्सा पाने के लिए डाक्टर पटेल को तकलीफ नहीं दी।

दो घण्टे बाद जब भरत स्कूल के हाल में आया और जब उसने हर व्यक्ति का ध्यान आकृष्ट किया तो दो हजार आँखे उसकी ओर ताकने लगीं। एक भी व्यक्ति नहीं रोया। केवल कुछ शिशु रो रहे थे।

भरत ने घोषणा की, "शत्रु चला गया है अब वह कभी नहीं लौटेगा।"

सभी ने राहत की सांस ली और लोग प्रार्थना में लीन हो गये।

धर्म सिंह का प्रश्न था, "लेकिन आपको यह कैसे पता है कि चक्रवात फिर कभी नहीं लौटेगा।"

"चक्रवात का जिक्र कब किसने किया था ? हमारा शत्रु तो हमारा अज्ञान और आपदा तत्परता को लेकर हमारी आत्मतुष्टि थी।"

कोई भी व्यक्ति अपने स्थान से नहीं हिला। जिस वायरमैन ने एक पवित्र प्रयोजन के लिए टेलीफोन लाइन का' दी थी वही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसने इस सफल नकली अभ्यास (मौक ड्रिल) के लिए भरत की पीठ थपथपाई।

अभ्यास

- सुखपार गांव की कहानी में घटी घटनाओं का क्रम तथा आपदा जोखिम प्रबंध में उनका महत्व अभिज्ञात करें।
- नया सुखपार समुदायों के इकट्ठा होने से पूर्व के सुखपार से किस तरह भिन्न है ?
- भरत के कौनसे गुण हैं जो उसे गांव में अन्य से अलग पहचान दिलाते हैं ? क्या आपके समुदाय के भीतर ऐसे गुण पैदा किए जा सकते हैं -पता लगाइए।
- अपनी कक्षा तथा अपनी कालोनी में कम से कम एक भरत जैसा लड़का और गौरी जैसी लड़की ढूढ़ें।
- क्या आप अपनी बस्ती के लिए : अपने स्कूल तथा घर के इर्द-गिर्द इसी प्रकार का पीआरए कर सकते हैं ?
- डीएमटी के अधीन कौनसे क्षेत्र शामिल किए गए थे ?
- पीआरए में क्या कुछ शामिल किया गया था ?
- कहानी में दुष्प्रभावों को कम करने के लिए निर्माण से संबंधित कौनसी दो तकनीकों का उल्लेख किया गया है ?